RHYTHM AND JUNGLES

शब्दार्थ माधुर्य

मानव चेतना सम्पन्न तथा संवेदनशील प्राणी है। इसका मन अपने शरीर पर पड़ने वाले सुख-दुख, प्रेम, दया, क्रोध एवं आशा से चलायमान रहता है और प्रकृति के प्रतिफल परिवर्तन होने वाले सौम्य मनोरम, विकराल रूपों से भी भाव ग्रहण करता चलता है। साथ ही वाणी का वरदान भी मानव को चिरकाल से प्राप्त है। मनुष्य की इसी प्रवृति की प्रेरणा से ज्ञान और आनन्द के उस भण्डार का सृजन, संचय एवं संवर्धन होता रहा है, जिसे साहित्य कहते हैं।

साहित्य का ही एक अंग कविता है, जो मानवीय भावों का सहज अभिव्यक्तिकरण है। कविता आत्मा की संकल्पनात्मक अनुभूति है जो छन्दोबद्ध तथा नियमित गति में होने के कारण ताल और लय पर चलती है।

कविता हृदय की सीधी-साधी अभिव्यक्ति है। उसमें हृदय का स्रोत फूटकर बाहर निकलना चाहता है अतः उसे निर्बाध गति से ही पढ़ना चाहिए। यह हमारे प्राणों का संगीत है, अतः कविता का पाठ इस प्रकार मधुर सस्वर प्रभावपूर्ण हो जिससे छात्र कविता का संगीत माधुर्य उसकी काल्पनिक उड़ान उसके असाधारण संवेगात्मक वातावरण का अनुभव कर सके।

कवि और कविता में ~~कक्षा~~ कक्षा को जीवन्त कर देना ही सफल अध्यापक की विशेषता है।

शिक्षक को सस्वर कविता पाठ का आयोजन विद्यालय में होना चाहिए, जिसे छात्रों में कविता के प्रति रुचि जाग्रत हो।

- विद्यालय में कवि जयन्ती, काव्यगान, कवि सम्मेलन, काव्यगोष्ठी का आयोजन करते रहना चाहिए।

छोटी कक्षाओं में सस्वर कविता पाठ करवाना चाहिए।

कविता पाठ करते समय ध्यान अवश्य रखना चाहिए

1. अशुद्ध एवं बेसुरे उच्चारण वाले बालकों से कविता नहीं पढ़वानी चाहिए।

2. कविता शिक्षण के समय श्यामपट्ट का प्रयोग कम करना चाहिए।

3. काव्यपाठ में चित्र आदि न दिखाकर कल्पना को उत्तेजित करना चाहिए।

4. व्याकरण का विश्लेषण कविता पाठ से कम से कम होना चाहिए।

5. अध्यापक द्वारा कविता का सस्वर वाचन।—

Scanned by TapScanner

पंचवटी में वीर लक्ष्मण

चारु चन्द्र की चंचल किरणें
खेल रही हैं जल थल में।
स्वच्छ चाँदनी बिछी हुई है,
अवनि और अम्बर तल में॥
पुलक प्रकट करती है धरती,
हरित तृणों की नोकों से।
मानो झूम रहे हैं तरु भी,
मन्द पवन के झोंकों से॥
पंचवटी की छाया में है,
सुन्दर पर्ण-कुटीर बना।
उसके सम्मुख स्वच्छ शिला पर,
धीर वीर निर्भीक मना॥

Scanned by TapScanner

जाग रहा यह कौन धनुर्धर,
जबकि भुवन भर सोता है।
भोगी कुसुमायुध योगी-सा,
बना दृष्टिगत होता है॥

कविता की उपर्युक्त पंक्तियों में कितनी भाव विश्लेषणात्मक रसानुभूति दृष्टिगोचर हो रही है कि पंचवटी की पृथ्वी हरी-भरी है। हरा रंग समृद्धि का सूचक है। कवि की कल्पना में धरती समृद्धि, सम्पन्नता को हरे तिनकों की नोकों से अपनी प्रसन्नता के रूप में प्रकट कर रही है यहाँ बसन्त में पृथ्वी की छटा कितनी मनोरम है—

तेरे स्वागत को है बसन्त
वधु वसुधा पुलकित सी होकर।
अपना शृंगार सँभाल रही,
चिर वासित सा आलस खोकर॥

Scanned by TapScanner